Sanskrit Honours 14-9-20
Part - I
Paper - I

मेघदूतम्

श्लोक - 21

नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्द्धरूढैः
रावि श्रेतप्रथमसुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम्।
जग्धवारण्येष्वधिकसुरभि गन्धमाघ्राय चोर्व्याः
सारङ्गास्ते जलदवमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम्॥

अर्थ - आधे निकले हुए केसरों से हरे और धूसर रंगवाले कदम्ब के फूलों को देखकर और दलदल में उगी हुई पहली-पहली कलियोंवाली कन्दली को खाकर एवं जंगलों में पृथ्वी की बहुत अधिक तेज गन्ध सूँघकर मृग, जल की बूँदें बरसानेवाले तेरे मार्ग को सूचित करेंगे।